14.1.90

पुरुषार्थ की तीव्रगति में कमी के दो मुख्य कारण

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले –

आज ब्राह्मणों के अनादि रचता बापदादा विशेष अपनी डायरेक्ट समीप रचना, श्रेष्ठ रचना — ब्राह्मण बच्चों को देख रहें हैं। बापदादा की अति प्यारी रचना ब्राह्मण आत्माएं हो जो समीप और समान बनने के लक्ष्य को सदा स्मृति में रख आगे बढ़ रहे हो। जो आज ऐसी आदि रचना को विशेष रूप से देख रहें थे। सर्व तीव्र पुरुषार्थी और पुरुषार्थी दोनों की गतिविधि को देख रहें हैं। बापदादा द्वारा मिली हुई श्रेष्ठ सहज विधि द्वारा कब तीव्र गति व कब तीव्र, कभी कम गति - दोनों ही प्रकार के ब्राह्मण बच्चों को देखा। पढ़ाई, पालना और प्राप्ति - सबको एक जैसी एक द्वारा मिल रही है, फिर गति में अंतर क्यों? तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् फ़र्स्ट डिवीज़न वाले और पुरुषार्थी अर्थात् सेकण्ड डिवीज़न में पास होने वाले। आज विशेष सभी का चार्ट चेक किया। कारण बहुत हैं लेकिन विशेष दो कारण हैं। चाहना सबकी फ़र्स्ट डिवीज़न की है, सेकण्ड डिवीज़न में आना कोई नहीं चाहता। लेकिन लक्ष्य और लक्षण, दोनों में अंतर पड़ जाता है। विशेष दो कारण क्या देखे?

एक – संकल्प शक्ति जो सबसे श्रेष्ठ शक्ति है उसको यथार्थ रीति स्वयं प्रति वा सेवा प्रति समय प्रमाण कार्य में लगाने की यथार्थ रीति नहीं है। **दूसरा कारण** – वाणी की शक्ति को यथार्थ रीति, समर्थ रीति से कार्य में लगाने की कमी। इन दोनों में कमी का कारण है — यूज़ के बजाय लूज़। शब्दों में अंतर थोड़ा है लेकिन परिणाम में बहुत अंतर पड़ जाता है। बापदादा ने सिर्फ ३-४ दिन की रिज़ल्ट देखी, टोटल रिज़ल्ट नहीं देखी। हर एक की ३-४ दिन की रिज़ल्ट में क्या देखा? ५०% अर्थात् आधा-आधा। संकल्प और बोल में दोनों शक्तियों के जमा का खाता ५०% आत्माओं का ठीक था लेक़िन बिल्कुल ठीक नहीं कह रहे हैं और ५०% आत्माओं जमा का खाता ४०% और व्यर्थ वा साधारण का खाता ६०%

देखा। तो सोचो जमा कितना हुआ! ज़्यादा वज़न किसका हुआ? इसमें भी वाचा के कारण मन्सा पर प्रभाव पड़ता है। मन्सा, वाचा को भी अपनी तरफ़ खींचती है। आज बापदादा वाणी अर्थात् बोल की तरफ़ विशेष अटेन्शन दिला रहे हैं। क्योंकि बोल का सम्बन्ध अपने साथ भी है और सर्व के साथ भी है। और देखा क्या? मन्सा द्वारा याद में रहना है — उसके लिए फिर भी बीच-बीच में प्रोग्राम रखते हैं। लेकिन बोल के लिए अलबेलापन ज़्यादा है, इसलिए बापदादा इस पर विशेष अण्डरलाइन करा रहे हैं। दो वर्ष पहले बापदादा ने विशेष पुरुषार्थ में सेवा में आगे बढ़ने वाले महारथी आत्माओं को और सभी को तीन बातें 'बोल' के लिए कहीं थीं — **"कम बोलो, धीरे बोलो और मधुर बोलो।"** व्यर्थ बोलने की निशानी है — वह ज़्यादा बोलेगा, मज़बूरी से समय प्रमाण, संगठन प्रमाण अपने को कण्ट्रोल करेगा लेकिन अंदर ऐसा महसूस करेगा जैसे कोई ने शान्ति में चुप रहने लिए बाँधा है। व्यर्थ बोल बड़े-ते-बड़ा नुकसान क्या करता है? एक तो शारीरिक एनर्जी समाप्त होती क्योंकि खर्च होता है और दूसरा — समय व्यर्थ जाता है। व्यर्थ बोलने वाले की आदत क्या होगी? छोटी-सी बात को बहुत लंबा-चौड़ा करेगा और बात करने का तरीका कथा माफिक होगा। जैसे रामायण, महाभारत की कथा... इंट्रेस्ट से सुनाते हैं ना। खुद भी रुचि से बोलेगा, दूसरे की भी रुचि पैदा कर लेगा। लेकिन रिज़ल्ट क्या होती? रामायण, महाभारत की रिज़ल्ट क्या है? राम बनवास गया और कौरवों और पाण्डवों की युद्ध हुई — जैसी दिखाते हैं? सार कुछ भी नहीं लेकिन साज़ बहुत रमणीक होता है। इसको कहते हैं कथा! व्यर्थ बोलने वाले माया के प्रभाव के कारण जो कमज़ोर आत्मा है, उन्हों को सुनने और सुनाने के साथी बहुत जल्दी बनाते हैं। ऐसी आत्मा एकांतप्रिय हो नहीं सकती। इसलिए वह साथी बनाने में बहुत होशियार होगा। बाहर से कभी-कभी ऐसे दिखाई देता है कि इन्हों का संगठन पावरफुल और ज़्यादा लगता है। लेकिन एक बात सदा के लिए याद रखो कि "माया के जाने का अंतिम चरण हैं, इसलिए विदाई लेते-लेते भी अपना तीर लगाती रहती है।" इसलिए कभी-कभी, कहाँ-कहाँ माया का प्रभाव अपना काम कर लेता है। वह आराम से जाने वाली नहीं है। लास्ट घड़ी तक डायरेक्ट नहीं तो इण्डायरेक्ट, कड़वा रूप नहीं तो बहुत मीठा

रूप और नया-नया रूप धारण कर ब्राह्मणों की ट्रायल करती रहती है। फिर भोले-भाले ब्राह्मण क्या कहते? यह तो बापदादा ने सुनाया ही नहीं था कि इस रूप में भी माया आती है! अलबेलेपन के कारण अपने को चेक भी नहीं करते और सोचते कि बापदादा तो कहते हैं कि माया आयेगी..। आधा अक्षर याद रखते हैं कि माया आयेगी लेकिन मायाजीत बनना है — यह भूल जाते हैं।

और बात — व्यर्थ वा साधारण बोल के भिन्न-भिन्न रूप देखे। एक — सीमा से बाहर अर्थात् लिमिट से परे हँसी-मज़ाक, दूसरा — टोंटिंग वे (Tonting-way)। तीसरा — इधर-उधर के समाचार इकट्ठा कर सुनना और सुनाना, चौथा — कुछ सेवा-समाचार और सेवा समाचार के साथ सेवाधारियों की कमज़ोरी का चिंतन — यह मिक्स चटनी और पाँचवा — अयुक्तियुक्त बोल, जो ब्राह्मणों की डिक्शनरी में हैं ही नहीं। यह पाँच रूप रेखायें देखीं। इन पाँचों को ही बापदादा 'व्यर्थ बोल' में गिनती करते हैं। ऐसा नहीं समझो — हँसी-मज़ाक अच्छी चीज़ है। हँसी-मज़ाक अच्छा वह है जिसमें रूहानियत हो और जिससे हँसी-मज़ाक करते हो उस आत्मा को फायदा हुआ, टाइम पास हुआ वा टाइम वेस्ट गया? रमणीकता का गुण अच्छा माना जाता है लेकिन व्यक्ति, समय, संगठन, स्थान, वायुमण्डल के प्रमाण रमणीकता अच्छी लगती है। अगर इन सब बातों में से एक बात भी ठीक नहीं तो रमणीकता भी व्यर्थ की लाइन में गिनी जायेगी और सर्टिफ़िकेट क्या मिलेगा कि हँसाते बहुत अच्छा है लेकिन बोलते बहुत हैं। तो मिक्स चटनी हो गई ना। तो समय की सीमा रखो। इसको कहा जाता है — 'मर्यादा पुरुषोत्तम।' कहते हैं — मेरा स्वभाव ही ऐसा है। यह कौन-सा स्वभाव है? बापदादा वाला स्वभाव है? तो इसको भी 'मर्यादा पुरुषोत्तम' नहीं कहेंगे, साधारण पुरुष कहेंगे। बोल सदैव ऐसे हों जो सुनने वाले चात्रक हों कि यह कुछ बोले और हम सुनें — इसको कहा जाता है 'अनमोल महावाक्य।' महावाक्य ज़्यादा नहीं होते। जब चाहे तब बोलता रहे — इसको महावाक्य नहीं कहेंगे। तो सतगुरु के बच्चे — मास्टर सतगुरु के महावाक्य होते हैं, वाक्य नहीं। व्यर्थ बोलने वाला अपनी बुद्धि में व्यर्थ बातें, व्यर्थ समाचार, चारों ओर का कूड़ा-किचड़ा ज़रूर इकट्ठा करेगा क्योंकि उनको कथा का रमणीक रूप देना

पड़ेगा। जैसे शास्त्रवादियों की बुद्धि है ना। इसलिए जिस समय और जिस स्थान पर जो बोल आवश्यक हैं, युक्तियुक्त हैं, स्वयं के और दूसरी आत्माओं के लाभ-लायक हैं, वही बोल बोलो। बोल के ऊपर अटेन्शन कम है। इसलिए इस पर डबल अण्डरलाइन।

विशेष इस वर्ष बोल के ऊपर अटेन्शन रखो। चेक करो – बोल द्वारा एनर्जी और समय कितना जमा किया और कितना व्यर्थ गया? जब इसको चेक करेंगे तो स्वत: ही अंतर्मुखता के रस को अनुभव कर सकेंगे। अंतर्मुखता का रस और बोलचाल का रस – इसमें रात-दिन का अन्तर है। अन्तर्मुखी सदा भृकुटि की कुटिया में तपस्वीमूर्त का अनुभव करता है। समझा!

समझना अर्थात् बनना। जब कोई बात समझ में आ जाती है तो वह करेगा ज़रूर, समझेगा ज़रूर। टीचर्स तो हैं ही समझदार। तब तो भाग्य मिला है ना। निमित्त बनने का भाग्य – इसका महत्त्व अभी कभी-कभी साधारण लगता है, लेकिन यह भाग्य समय पर अति श्रेष्ठ अनुभव करेंगे। किसने निमित्त बनाया, किसने मुझ आत्मा को इस योग्य चुना – यह स्मृति ही स्वत: श्रेष्ठ बना देती है। "बनाने वाला कौन"!– अगर इस स्मृति में रहो तो बहुत सहज निरन्तर योगी बन जायेंगे। सदा दिल में, बनाने वाले बाप के गुणों के गीत गाते रहो तो निरन्तर योगी हो जायेंगे। यह कम बात नहीं है! सारे विश्व की कोटों की कोट आत्माओं में से कितनी निमित्त टीचर्स बनी हो! ब्राह्मण परिवार में भी टीचर्स कितनी हैं! तो कोई-में-कोई हो गई ना! टीचर अर्थात् सदा भगवान और भाग्य के गीत गाती रहें। बापदादा को टीचर्स पर नाज़ होता है लेकिन राजयुक्त टीचर्स पर नाज़ होता है अच्छा –

प्रवृत्ति वाले भी मज़े में रहते हैं ना। मूंझने वाले हो या मज़े में रहने वाले हो? ब्राह्मण-जीवन के हर सेकण्ड तन, मन, धन, जन का मज़ा ही मज़ा है। आराम से सोते हो, आराम से खाते हो। आराम से रहना, खाना, सोना और पढ़ना। और कुछ चाहिए क्या? पढ़ना भी ठीक है या अमृतवेले सो जाते हो? ऐसे कई बच्चे करते हैं, कहेंगे– सारी रात जाग रहे थे, सुबह को नींद आ गई। या एक सेवा करेंगे तो अमृतवेले को छोड़ देंगे। तो मज़ा क्या हुआ? एक्स्ट्रा जमा तो हुआ नहीं। एक तरफ़

सेवा की, दूसरे तरफ़ अमृतवेला मिस किया। तो क्या हुआ? लेकिन नेमीनाथ माफिक ऐसे झुटका खाते नहीं बैठना। वह टी.वी. बहुत अच्छी होती है। जैसे वह योग के आसन करते हैं ना — अनेक प्रकार के पोज़ बदलते रहते हैं। तो यहाँ भी ऐसे हो जाते हैं। सोचते हैं — सहज योग है ना, इसलिए आराम से बैठो। कइयों की तो ट्यून भी बापदादा के पास सुनने में आती है। बापदादा के पास वह भी कैसेट है। तो अब डबल अण्डरलाइन करेंगे ना। फिर बापदादा सुनायेंगे कि रिज़ल्ट में कितना अन्तर पड़ा। अच्छा —

चारों ओर के श्रेष्ठ लक्ष्य और श्रेष्ठ लक्षण धारण करने वाले तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं को, सदा अपने बोल को समय और संयम में रखने वाले पुरुषोत्तम आत्माओं को, सदा महावीर बन माया के सर्व रूपों को जानने वाले नालेजफुल आत्माओं को सदा हर सेकण्ड मौज में रहने वाले बेफिक्र बादशाहों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

ज़ोन वाइज़ ग्रुप से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

१. साइलेन्स की शक्ति को अच्छी तरह से जानते हो? साइलेन्स की शक्ति सेकण्ड में अपने स्वीट होम, शान्तिधाम में पहुँचा देती है। साइंस वाले तो और फास्ट गति वाले यंत्र निकालने का प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन आपका यंत्र कितनी तीव्रगति का है! सोचा और पहुँचा! ऐसा यंत्र साइंस में हैं जो इतना दूर बिना खर्च के पहुँच जाएँ? वो तो एक-एक यंत्र बनाने में कितना खर्चा करते हैं, कितना समय और कितनी एनर्जी लगाते हैं, आपने क्या किया? बिना खर्चे मिल गया। 'यह संकल्प की शक्ति सबसे फास्ट है।' आपको शुभ संकल्प का यंत्र मिला है, दिव्य बुद्धि मिली है। शुद्ध मन और दिव्यबुद्धि से पहुँच जाते हो। जब चाहो तब लौट आओ, जब चाहो तब चले जाओ। साइंस वालों को तो मौसम भी देखनी पड़ती है। आपको तो यह भी नहीं देखना पड़ता कि आज बादल हैं, नहीं जा सकेंगे। आजकल देखो — बादल तो क्या थोड़ी-सी फ़ागी भी होती है तो भी प्लेन नहीं जा सकता। और आपका विमान एवररेडी हैं या कभी फ़ागी आती है? एवररेडी है? सेकण्ड में जा सकते हैं— ऐसी तीव्रगति है? माया कभी रुकावट तो नहीं डालती है? मास्टर सर्वशक्तिवान

को कोई रोक नहीं सकता। जहाँ सर्वशक्तियाँ हैं वहाँ कौन रोकेगा! कोई भी शक्ति की कमी होती है तो समय पर धोखा मिल सकता है। मानो सहनशक्ति आप में है लेकिन निर्णय करने की शक्ति कमज़ोर है, तो जब ऐसी कोई परिस्थिति आयेगी जिसमें निर्णय करना हो, उस समय नुकसान हो जायेगा। होती एक ही घड़ी निर्णय करने की है – हाँ या ना, लेकिन उसका परिणाम कितना बड़ा होता है! तो सब शक्तियाँ अपने पास चेक करो। ऐसे नहीं ठीक है, चल रहे हैं योग तो लगा रहे हैं। लेकिन योग से जो प्राप्तियाँ हैं – वह सब है? या थोड़े में खुश हो गये कि बाप तो अपना हो गया। बाप तो अपना है लेकिन प्रापर्टी (वर्सा) भी अपनी है ना या सिर्फ बाप को पा लिया – ठीक है? वर्से के मालिक बनना है ना? बाप की प्रापर्टी है 'सर्वशक्तियाँ' इसलिए बाप की महिमा ही है 'सर्वशक्तिवान आलमाइटी अथार्टी।' सर्वशक्तियों का स्टॉक जमा है? या इतना ही है – कमाया और खाया, बस! बापदादा ने सुनाया है कि आगे चलकर आप मास्टर सर्वशक्तिवान के पास सब भिखारी बनकर आयेंगे। पैसे या अनाज के भिखारी नहीं लेकिन 'शक्तियों' के भिखारी आयेंगे। तो जब स्टाक होगा तब तो देंगे ना! दान वही दे सकता जिसके पास अपने से ज़्यादा है। अगर अपने जितना ही होगा तो दान क्या करेंगे? तो इतना जमा करो। संगम पर और काम ही क्या है? जमा करने का ही काम मिला है। सारे कल्प में और कोई युग नहीं है जिसमें जमा कर सको। फिर तो खर्च करना पड़ेगा, जमा नहीं कर सकेंगे। तो जमा के समय अगर जमा नहीं किया तो अन्त में क्या कहना पड़ेगा – '' अब नहीं तो कब नहीं'' फिर टू लेट (Too late) का बोर्ड लग जायेगा। अभी तो लेट का बोर्ड है, टू लेट का नहीं।

सभी माताओं ने इतना जमा किया है? शिव-शक्तियाँ हो या घर की मातायें हो? शिव-शक्ति कहने से शक्तियाँ याद आती है। किन माताओं को बाप ने शिव शक्तियाँ बना दिया है! अगर कोई शक्ल आकर देखे तो क्या कहेंगे! ऐसी शक्तियाँ होती हैं क्या! लेकिन बाप ने पहचान लिया कि वह आत्माएं शक्तिशाली हैं। बाप तो आत्माओं को देखता है, न बूढ़ा देखता, न जवान देखता, न बच्चा देखता। आत्मा तो बूढ़ी वा छोटी है ही नहीं। तो यह खुशी है ना कि हमको बाबा ने 'शिव-शक्ति' बना दिया। दुनिया में कितनी पढ़ी-लिखी मातायें हैं लेकिन बाप को

गाँव वाले ही पसंद है, क्यों पसंद है? "सच्ची दिल पर साहेब राज़ी"। बाप को सच्ची दिल प्यारी लगती है। जो भोले होंगे उन्हें झूठ-कपट करने नहीं आयेगा। जो चालाक, चतुर होते हैं उसमें यह सब बातें होती हैं। तो जिसकी दिल भोली है अर्थात् दुनिया की मायावी चतुराई से परे हैं, वह बाप को अति प्रिय है। बाप सच्ची दिल को देखता है। बाकी पढ़ाई को, शक्ल को, गाँव को, पैसे को नहीं देखता है। सच्ची दिल चाहिए, इसलिए बाप का नाम 'दिलवाला' है। अच्छा!

२. सदा इस ब्राह्मण-जीवन में राजयुक्त, योगयुक्त और युक्तियुक्त तीनों ही विशेषतायें अपने में अनुभव करते हो? ज्ञान के सब राज़ बुद्धि में स्पष्ट स्मृति में रहे— इसको कहते हैं 'राजयुक्त' और सदा रचना बाप को याद रखना — इसको कहते हैं 'योगयुक्त'। तो जो ज्ञानी और योगी आत्मा है — उसके हर कर्म स्वत: युक्तियुक्त होते हैं। युक्तियुक्त अर्थात सदा यथार्थ श्रेष्ठ कर्म। कोई भी कर्म रूपी बीज फल के सिवाए नहीं होता। उनके संकल्प भी युक्तियुक्त होंगे। जिस समय जो संकल्प चाहिए वही होगा। ऐसे नहीं — यह सोचना तो नहीं चाहिए था लेकिन सोच चलता ही रहा। इसे युक्तियुक्त नहीं कहेंगे। जो युक्तियुक्त होगा वह जिस समय जो संकल्प, वाणी या कर्म करना चाहे — वह कर सकेगा। ऐसे नहीं — यह करना नहीं चाहता था, हो गया। तो जो राजयुक्त, योगयुक्त होगा उसकी निशानी वह 'युक्तियुक्त' होगा। तो वह निशानी सदा दिखाई देती है? अगर कभी-कभी दिखाई देती तो राज्य-भाग्य भी कभी-कभी मिल जायेगा, सदा नहीं मिलेगा। लेने में तो कहते हो — सदा चाहिए और करने में कभी-कभी। ऐसे नहीं करना। अभी परिवर्तन करके जाओ। कभी-कभी की लाइन से, अभी सदा वाली लाइन में आ जाओ। जब जान लिया अनुभव कर लिया कि अच्छे-अच्छी बीज है तो अच्छी बीज को छोड़ कोई घटिया चीज़ क्यों लेंगे? तो अविनाशी खान पर आकर लेने में कमी नहीं करना। लेना है तो पूरा लेना है। दाता के भण्डारे भरपूर हैं, जितना भी लो अखुट है। तो अखुट खज़ाने के मालिक बनो। अच्छा —